श्रीवीतरागाय नमः।

अथ

श्री मध्यस्थ बोलकी हुंडी

लेखक—

मुनि श्री चतुरभुजजी महाराज

प्रकाशक—

चुनीलाल सुजानमल्ल

सरदारशहर निवासी,

Chunilall Sujanmull

Sardarshahar (Rajputana)

विक्रम सं० १९८० वीरनिर्वाण सं० २४४९ ई० सन १९२३

मूल्य सदुपयोग।

इस मध्यस्थ वोलकी हुंडीमे कोई जगह दृष्टि दोषसे काना मात्रा अक्षर या पद ओछा अधिका आगया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड जैसा हुंडीके पानेमें लिखा हुआ देखा वैसा ही लिखा है, इसमें कोई वोल सूत्र विपरीत मालूम पड़े तो नहीं मानना, यही प्रसिद्धकर्त्ता की विनति है। तत्व केवलीगम्य ॥

पुस्तक मिलनेका पता—

चुनीलाल सुजानमल,

सुतापट्टी कलकत्ता।

कलकत्ता

२०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में

मैनजर—पण्डित काशीनाथ जैन,

द्वारा मुद्रित।

* श्री वीतरागायनम *

(मुनि श्रीचतुरभुजजी महाराज कृत)

मङ्गलम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,
आचार्या जिनशासनोन्नति करा पूज्या उपाध्यायका ।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका,
पञ्चैते परमेष्ठिन प्रतिदिन कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

केवलज्ञानी को सदा, यदु वेकर जोड ।
गुरुमुखसे धारण करो, अपनी हठको छोड ॥ २ ॥
जिन वचन तहमेव सत्य, समभाव नहीं ताण ।
जतनासे वाचो सही एहि प्रभुकी वाण ॥ २ ॥

संवत १६२१ भीपणजा रे चोथे पाट जीतमलजी रा टोला माहि सु ऋषि चतुरभुज जी न्यारा हुवा, बोल छोड्या ते सूत्रकी साख

देइ सक्षेप मात्र लिखते हैं, हलुकर्मी जीव होसा ते सुण सुण ने हर्ष पामसा, त्याने न्यायमाग यताया शुद्धसाधा ने उत्तम जाणसो, कुगुरुने छोडने सद्गुरुने आदरसी ।

अथ प्रथम बोल ।

साधुने साध्वीने आचार्यने उपाध्यायने कपडा धोवणा नहीं, केईक कहे साधुसाध्वीने तो कपडा धोवणा नहीं, पिण आचार्यने उपाध्यायने धोवणा, इसी थाप करे छे, दोष सरघे नहीं तेहनो उत्तर—

"आचाराग सूत्रस्कध दूजे, अध्ययने पाचमें, उद्देशे दूजे ।" साधु साध्वीयाने कपडा धोवणा रंगणा वरज्या छे। तथा सुयगडाग सूत्रस्कध १ अध्ययन ७में गाथा २१में शोभा निमित्ते कपडा धोवणा १, स्नान करना २, असणादिक रात्रीवासी राखना ३ ए तीन बोल सेवे तिणने सजमसु दूर कह्या। तथा निसीथ उद्देसे १५में शोभा निमित्ते कपडादिक धोया चौमासी प्रायच्छित कह्यो छे। इत्यादिक ठाम ठाम सूत्रमें भगवान साधु साध्वीने कपडा धोवणा वरज्या छे। "आचार्य्य साधु साध्वी माहे आय गया" साधु रो आचार आचार्य रो आचार एकहीज छे। ते मणी आचार्यने अतिस यरे वास्ते कपडा धोयणा नहीं, बाकी तेहनो विस्तार तो बडी हुडी में छ तेहने देखने निर्णय करघो। तथा केईक ठाणागसूत्र अर्थमें तथा टीकामें आचार्यना अतिसय रे वास्ते कपडा धोवणा इम कह्यो, ते पाठमें तो नहीं छे अर्थ टीका री वात तो सूत्रसु मीले ते

प्रमाण छे, सूत्रसु मीले नहीं ते प्रमाण नहीं। अर्थ टीका में ता घणी वाता विरुद्ध कही छे ते बडी हुडी में छे ते जोय लेनी ॥ इति प्रथम वाल समाप्तम् ॥

अथ दूजो बोल ,—

साधुने महोच्छव री नाम लेई वाया भाया ने वाधा कराय लोकांने भेला करणा नहीं,महोच्छव करणा पिण नहीं,केई करे छे तेहनो उत्तर—निसीयसूत्र उद्देशे १२ में, साधु साध्वी महोच्छव देखणा निमित्ते मन धारे, मन धारता ने भलो जाणे तो चौमासी प्रायच्छित आवे। तथा दशवैकालिकमें अध्ययन ६ में उद्देशे ४थे जश महिमा रे वास्ते तपस्या करणी नहीं इम कह्यो छे। तथा उत्तराध्ययन आचारांग सूयगडांग आदि ठाम ठाम सूत्रमें साधुने महिमा पूजा मन करके वछनी वरजी छे,ते भणी साधुने महोच्छव करणा नहीं, साधु रे तो सदा ही महोच्छव छै; साधुने कोई निंदे कोई वन्दे तो सम भाव राखना बाकी विस्तार ता बडी हुडी में छे ॥ इति २ बोल ॥

अथ तीजो बोल ,—

साधु साध्वीने वस्त्र मर्यादा उपरान्त राखना नहीं केईक आचार्य रे वास्ते मर्यादा उपरात वस्त्र राखे, दोष गिणे नहीं तेहनो उत्तर तीन पछेवड़ी गिणतीमें उपरांत अधिक राखे तो चौमासी प्रायच्छित आवे। साख सूत्र निसीथे उद्देशे १में। तथा उपगरण री मरजादा

री विगत तो 'आचारांग' 'प्रश्नव्याकरण' आदि घणां सूत्र मांहैं छे उस प्रमाणे राखना। साधुरो आचार्यरो एक प्रमाण कह्यो छे, पिण आचार्यरो प्रमाण शास्त्रमें कठेइ न्यारो चाल्यो नहीं, ते भणी साधुने दोढमास उपरात वस्त्र अधिक राखे तो प्राछित आवे तो आचार्यने तथा आचार्यरे वास्ते साधु दोढमास उपरात वस्त्र राखे तो प्रायच्छित किम नहीं आवे ! ॥ इति ३ बोल ॥

अथ चोथो बोल —

साधु साध्वीने एक ओघो, एक पूंजणीसुं अधिक राखना नहीं, तथा दोढमास उपरात पिण अधिक राखना नहीं केई आचार्यरे वास्ते ओघा और पूजणी अधिक राख मेले छे, तथा दोढमास उपरांत पिण राखे छे, राखनारी थाप करे छे तेहनो उत्तर—

प्रमाण थी अधिक रजोहरण दोढमास उपरात राखे तो मासीक प्रायच्छित आवे, निसीथसूत्र उद्देशे ५ में इम कह्यो छे। ते भणी साधुरो प्रमाण आचार्यरो प्रमाण एक छे। साधुने दोढमास उपरान्त ओघो पूजणी अधिका न राखना, तो आचार्यने आचार्यरे वास्ते साधु साध्वीने ओघा पूंजणी दोढ मास उपरांत किम राखना ॥ इति ४ बोल ॥

अथ पाचमा बोल ,—

साधु साध्वीने प्रमाणसु अधिक पात्रा राखना नहीं। केई आचार्यरे वास्ते प्रमाणसे अधिक पात्रा राखे छे तथा राखनारी थाप करे छै तेहनो उत्तर -

तीन पात्रा उपरात अधिक पात्रा राखे तो चौमासी प्रायच्छित आवे इम कह्यो, साख सूत्र निसीथ उद्देशे १६में, अठे साधु साध्वी रो आचार्यरो प्रमाण एक पह्यो छे ते भणी साधु साध्वी आचाय ने जन दीठ तीन पात्रा राखना, अधिका न राखना। मात्री (पडगो) न्यारो छे ते बृहत्कल्पमें कह्यो छे, पिण सिंघारे दीठ एक राखनो, तेहमें आहारपाणी नहीं भोगनो, तथा पात्रा टूट जावे अथवा साधु साध्वी चल जावे तेहना पात्रा रह जावे जद दोढ मास उपरांत साधु साध्वीने राखना नहीं, तो आचार्यने तथा आचार्यरे वास्ते साधुसाध्वी ने किम राखना! । सूत्रमें तो कठेइ आचार्य रे वास्ते दोढ मास उपरान्त पात्रा राखना कह्यां नहीं ॥ ५ ॥ इति ५ बोल ॥

अथ छट्ठो बोल ,—

चरमलीरे वास्ते वस्त्र राखे तो चरमली बाधवाने काम आवे जीसा राखना, पिण चरमलीरा कल्पमें पला बिछावणा आदि करना नहीं केई करे छे तेहनो उत्तर—

चरमली साधुसाध्वीने राखनी कही। बृहत्कल्प उद्देशे १ में चरमली राखनी कही छे ते सिंघारे दीठ एक चरमली राखनी तें आहार करे जद आडि बाधवाने ते चरमली कही, पिण ते ओढणी तथा पहेरणी नहीं पला प्रमुख करना नहीं। पला बिछावणा रो कल्प न्यारो प्रश्नव्याकरण आदि सूत्रमें कह्यो तिण प्रमाणे राखना। तथा चरमली बाधवाने काम आवे इसो बिछावण पलादिक करे तो अटकाव दीसे नहीं ॥ ६ ॥ इति छट्ठो बोल ॥

अथ सातमो बोल ;--

प्रामादिक ने विषे शेष काल एक मास रहें यो कल्पे, साध्वीने शेपकाल दो मास रहे यो कल्पे। वृहत्कल्प उद्देशे १ में। तथा शीतकाले उष्णकाले एक मास रहें वर्षाकाले चारमास रहें। ए कल्प मर्यादा उल्ंघी ने रहे तो काल अतिक्रान्त दोष लागे। साख सूत्र आचाराङ्गसूत्रस्कंध २, अध्ययन २, उद्देश २ में। तथा चौमासा उतर्या पछिया विहार करणो, आचारागसूत्रस्कंध २ अध्ययन ३ उद्देश १। अठे साधुने एकमास उपरात रहेणा नहीं, चौमासो उतर्या पछे पछिया विहार करनो पिण सुखे समाधे रहेणो नहीं। केई कहे दीक्षा लेवे तो तेहने अर्थे पनरह दिन रहे तो दोष नहीं इसी परूपणा करे छै पिण सूत्रमें तो कठेइ दिक्षा लेवे तेहने वास्ते पनरह दिन अधिको रहेणो भगवान् कह्यो नहीं। सूत्रमें वर्षाकाले चौमासो शेषेकाल ए नवकल्प प्रमाण थकी अधिको रहे रहिताने भलो जाणे तो मासिक प्रायच्छित आवे, साख सूत्र निसीथ उद्देसे २ अथ अठे कल्प उपरांत एकरात्रि रहे तिणने मासिक प्रायच्छित आवे, तो कल्प उपरांत १५ दिन रहेवारी थाप कर दोष श्रद्धे नहीं तिणरा प्रायच्छि काई कहेणो। घणो विस्तार तो वडी हुंडी में छै ते जोय लेणी ॥ इति ७ बोल ॥

अथ आठमो बोल ,—

गाम नगरादिकने विषे साधु शेषेकाल एकमास रहे, चौमासे में चार मास रहे गौचरी मेल समेल करे, गाम नगर कोट प्रमुख

बाहिर घर हुवे वहा गौचरीने जावे, गाम नगर माहि पिण गौचरी करे। इम मेल समेल गौचरी करे तो चौमासो उतर्यां पछे, तथा शेषेकाल मास खमण रह्या पछे गाम नगर कोट बारे रहे वो नहीं केई रहे छे तेहनो उत्तर—बृहत्कल्प उद्देशे १ में। साधुने ग्रामादिक ने विषे एकमास रहेणो कल्पे, ग्रामादिक माहे गौचरी करणी कल्पे, साधु ने ग्रामादिक कोट प्रमुख बाहिर मासखमण रहेणो, गौचरी पिण बाहिर करनी। इमहीज साध्वीयाने चार मास रहे वो। दोय मास ग्रामादिक माहे, दोय मास ग्रामादिक बाहिर, बृहत्कल्पसूत्रमें इम कह्यो छे ते प्रमाणे रह्या दोष नहीं छे। केई गौचरी तो मेल समेल करे ने ग्रामादिक बाहिर रहे छे ने इम कहे—"एक बडे साधु सावे ग्रामादिक माहे रह्या जीसमें बडे साधु बहार रो आहारपाणी भोगवे नहीं जब बहार रहे तब एक बडो साधु मांहि लो आहार पाणी भोगवे नहीं" इम कहे छे, ने रहेवारी थाप करे छे। पिण भगवाने तो सूत्रमें इम कह्यो नहीं। भगवान तो सूत्रमें इम कह्यो कि माहे रहे तो माहे गौचरी करणी, बहार रहे जब बहार गौचरी करनी। मेल संमेल करनी नहीं, मास खमण उपरान्त रहेणो नहीं ॥ ८ ॥ इति ८ बोल ॥

अथ ९ मा बोल ;—

नित्यपिंड दूजा साधु साध्वीरो भी लायो आहारपाणी सुपे समाचे भोगवणो नहीं केई भोगवे छे। तेहनो उत्तर—नित्य

असणादिक आहार एकण घररो भोगवे तो अणाचारी कह्यां, साख सूत्र दशवैकालिक अध्ययन ३। तथा नित्यपिंड एकण घररो आहार भोगवे त्यांने छकायनी हिंसा लागे। द्रव्यलिङ्गी जति होय। साख सूत्र दशवैकालिक अध्ययन ६ गाथा ४६ मी। तथा एक घररो आहार लेवे भोगवे तो मनुष्यभव छोडी दुर्गतिमें जावे साख सूत्र उत्तराध्ययन का अध्ययन २० गाथा ४७ मी। तथा नित्यरो नित्य असणादिक आहार एकण घरनो भोगवे तो मासिक प्रायच्छित आवे, साख सूत्र निसीथ उद्देशे २ जे। इत्यादिक ठाम ठाम सूत्रमें साधुने नित्यपिंड आहार भोगवणा वरजा छे ते भणी साधु ने असणादिक ४ आहार सुखे समाधे भोगवणा नहीं। केई पहेले दिन तो आप आहारादिक भोगव्यो पिछे दूजे दिन तिण हीज घरनो परगामसु साधु आयो आया त्याकनासु आहारादिक मंगाई भोगवे छे। तथा आहारादिकरे वास्ते गाम बाहिर तथा परगाम साधु साध्वीया ने भेजे छे दूजे दिन बुलाई त्याकनासु नित्यपिंड आहारादि मंगाई भोगवे छे, भोगववारी थाप पिण करे छे दोष थके नहीं। तो एक दिन नित्यपिंड भोगवे तिणने

ता सदाई नित्यपिंड भोगववारी थाप

विस्तार तो घणो हुंडीमें

का हो हवेली बाहिर, दिवानखाना, दुकान, नोरा आदि गाम माहै कहीं भी हो वहा नहीं वहेरना, केई वहरे छे तेहनो उत्तर--मास खमण कोट माहे रहेवो कल्पे, तथा कोट बाहिर मासखमण रहेवो कल्पे। एव दो मास साधु ने रहेवो कल्पे। कोट माहे रहे जब कोट माँहे गोचरी करवी कल्पे, कोट बाहिर रहे जब कोट बाहिर गोचरी करवी साख सूत्र 'बृहत्कल्प उद्देशे १ ले' इम कह्यो। ते भणी। कोट माहे रहे जब मासखमण हुवा पछे कोट माहि कहीं भी रहणो नहीं। कोट माँहे एक क्षेत्र कह्यो छे। रहवारे ठिकाने एक मास रो कल्प छे। वहेरवारे ठिकाने एक दिन रो कल्प छे। बुद्धिमान होय ते विचारी जोवो ॥ इति १० बोल ॥

अथ इग्यारवाँ बोल —

साधुने टुणा जंत्रमंत्रादिक करना नहीं केई करेछै तेहनो उत्तर साधुने सर्पादिक डंक देवे उसी समय गृहस्थ ने भी सर्पादिक काटे वहा झाड़ो देवाने (सर्पादि उतारवाने) आवे मंत्रादिक गुणे वहां साधुने वगादिक राखना कल्पे इम कह्यो, साख—'व्यवहार सूत्र उद्देशे सातवें'। तथा साधु वशीकरण डोरा जत्रमंत्रादिक करे, करताने भलो जाणे तो मासिक प्रायच्छित आवे, साख- 'निसीथ सूत्र उद्देशे तीजे' इम कह्यो छे। ते भणी साधु साध्वीने जत्रमत्रादिक में टुणा पिण आया। तथा 'उत्तराध्ययन अध्ययन पाचवें' कुविद्या सव दोषने उपजावे अनंतकाल तक संसार में रूलावे इम कह्यो ते भणी जत्रमत्र टुणादिक कुविद्यामें दिसे छे ते

भणी साधु साध्वीने करना नहीं। विस्तार ता यही हुंडी में छे। इति ११ बोल ॥

अथ बारहवाँ बोल —

साध्वीने हाट चहुटाने विषे रहना नहीं कर रहे छे तेहनो उत्तर-साध्वीने हाट चहुटाने विषे रहना कल्पे नहीं, साख सूत्र 'वृहत्कल्प उद्देशे पहले बोल १२, १३, । तथा साध्वीने पुरुष रहेता हुवे ते उपाश्रयमें रहना कल्पे नहीं स्त्री रहेती जानी हों त्या रहना कल्पे। साख सूत्र 'वृहत्कल्प उद्देशे पहेले बोल २९, ३०'। इम कह्यो। ते भणी साध्वीने हाट चहुटाने विषे उपाश्रये रहे यो नहीं। येह हाट उपर मालीया प्रमुख हुवे वहा पुरुषारो प्रवेश घणो छे, आवण जावण घणो छे, मनुषारो समुह घणो रह्या करेछे, नीचे हाट खुले छे पगथीया बजारमें छे रात्रि में माशा वही नीति प्रमुख परठव धाने आवे जब पुरुषा री मेल सभेल हुवारो ठिकानो छे, यहवी जगामें साध्वी उतरे छे, उतरवारी थाप करेछे दोष श्रद्धे नहीं, भगवान तो सूत्रमें इम कहि कह्यो नहीं आपरे मनसु थाप करे छे। तथा अलायदी जगा हुवे, पुरुषारो प्रवेश घणो हुवे नहीं नीचेकी दुकान खुले नहीं, यहवी जगामें साध्वी उतरे तो दोष नहीं ॥ इति १२ वाँ बोल ॥

अथ तेरहवाँ बोल ,—

साधुने गृहस्थ रे घर माहि बैठ कर स्त्री रहेती हुवे यहा धम-

कथा कहेनी नहीं। घोलचाल शिखावणा नहीं। घेई सिखावे हैं तेहनो उत्तर—साधुसाध्वीने गृहस्थ रे घरमें जाकर खडा रहना १, घेसना २, निद्रा लेनी ३, चार आहार नो करणो ४, उच्चार ५, पासवणादिक परठना, सज्झाय करना इत्यादिक साधुने गृहस्थके घर जाकर करना नहीं। पिण इतना विशेष-रोगी, स्थीवर, तपस्वी, जोजरी देह, मूर्च्छा पामे इत्यादि कारण हो तो बेठना सोना सज्झाय करनी कल्पे। साखसूत्र 'वृहत्कल्प उद्देसे तीजे घोल इकीसमें'। तथा साधु साध्वीने गृहस्थरा घरने विषे बैठकर चारगाथा तथा पाच गाथा जुदा जुदा विस्तार करने कथा वार्त्ता गुणकीर्त्तन आदि बखान करना कल्पे नहीं। इतना विशेष-एक हेतुसे अधिक कहना, एक गाथासे अधिक कहना, एक प्रश्नसे अधिक कहना, एक श्लोकसे अधिक कहना कल्पे नहीं। पिण खड़ा रहकर एक हेतु एक गाथा एक प्रश्न एक श्लोक कहना कल्पे। साख सूत्र 'वृहत्कल्प उद्देशे तीजे घोल २२में'। तथा गृहस्थरे घरने विषे कारण विना वैठे तो अनाचार, साख सूत्र 'दशवैकालिक अध्ययन तीजे। आत्म संयमनी विराधना हुवे ते माटे गृहस्थरे घरने विषे बेसे नहीं, सुवे नहीं ससार भमवानो हेतु जाणीने ग्रहस्थ रे घरने विषे बेसवो सुवो परीहरे। साख सूत्र 'सुयगडागसूगस्कध पहेले, अध्ययन नवमें गाथा २१ में'। गृहस्थरा घरने विषे साधु बैसे तो मिथ्यात्व नो फल पामे, ब्रह्मचर्यनो विणास हुवे, प्राणी नो वध हुवे, सजम नो विणास हुवे, भीखारीने अतराय थाय, घररा धणीने क्रोध उपजे, नववाड भाजे,

स्त्रीने पिण शंका उपजे,कुशील वधवानो ठाम छे ते भणी गृहस्थरे घरे साधु बेसवो दूरथकी वरजे। पिण जरा पराभव्यो हुवे तपस्वी रोगी ए तीनो ने बेसवो कल्पे। साख सूत्र दशवैकालिक अध्ययन छठ्ठा गाथा ५७ ५८ ५६,६० में छे' इत्यादि सूत्रमें घणी ठोर साधुने गृहस्थरा घरने विषे बेसणो वरज्यो। ते भणी साधु साध्वीने गृहस्थरे घरने विषे बसने धर्मकथा वार्त्ता चरचा तथा बोल शिखावणा नहीं। वखाण प्रमुख देना नहीं। विस्तार तो बडी हुंडीमें छे ते जोय लेणो ॥ इति १३ बोल ॥

अथ १४ बोल ,—

साधुने गृहस्थरे घर मध्ये जायने मालीया प्रमुखरे विषे उतरवो नहीं केई उतरे छै तेहनो उत्तर—साधुने स्त्री रहेती हुवे ते उपाश्रये रहेवो न कल्पे। साधुने पुरुष रहेता हुवे ते उपाश्रय रहेवो कल्पे। साध्वीने पुरुष रहेता हुवे ते उपाश्रय रहवो न कल्पे। साध्वीने स्त्री रहती हुवे ते उपाश्रय रहेवो कल्पे। साख सूत्र 'वेद्-कल्प उद्देशे पहेले'। तथा साधुने गृहस्थरा घरने मध्य भागे जईने रहेवा न कल्पे। तथा साध्वीने गृहस्थना घरने मध्य भागे जईने रहवो कल्पे। साख सूत्र 'वेद्कल्प उद्देशे पहेले' इम कह्यो छे। ते भणी साधुने गृहस्थरा घर मध्ये लगाया रहेती हुवे ते घरमें माल्यादिक में रहेणो नहीं। केई घरमें पिण रहे छे, रहवारी थाप करेछे दोष श्रद्धे नहीं। केई मालिया प्रमुखमें रहेवे पिण छे रहेवारी थाप पिण करेछे ॥ इति १४ बोल ॥

अथ १५ बोल —

स्त्री बठी हुवे ते जगा अन्तर्मुहूर्त्त टालणी, केई टालते नहीं है तेहनो उत्तर—'उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन १६ में'। स्त्री साथे एक आसन पीढ पर्‌यंग बिछाणे उपर बेसे नहीं। तथा अर्थमें स्त्री बेठी हुवे ते जगा भी अंतर्मुहूर्त्त टालणी। केई अतर्मुहूर्त्त टाले नहीं। अंतर्मुहूर्त्त जघन्य स भारी कहीने स्त्री बैठके उठे जब साधु जदका जद बठे छे बेठवारी थाप पिण करेछे इमहीज साध्वी पुरुष बैठे उठे पिण बैठे छे बेठवारी थाप पिण करेछे बेठ वारे ठिकाने अंतर्मुहूर्त्त स मारे नहीं। अठे तो अंतर्मुहूर्त्त जघन्य एक घडीमें टेरी संभवे। उत्कृष्टी दोय घडी में टेरी सभवे छे। विस्तार तो बडी हुंडीमें छे ॥ १५ बोल ॥

अथ १६ बोल —

बोसर ब्याह प्रमुखरे वासते मिठाई आदि जो चीजा कीधी ते जान प्रमुख जीम्या पहेली लावणी नहीं। तथा घणा लोक जीमे वहां गौचरी जावणो नहीं तेहनो उत्तर—जे दिशामें जीमणवार हो उससे पश्चिम दिशामें जावणो। इमहीज चार दिशामें जावणो। मुखडीने आण आइ देतो थको गौचरी जाय इत्यादि घणो विस्तार छे। साख सूत्र—'आचारांग दूजे अध्ययन पहेले उद्देशे पहेले तथा घणा लोक जीमें तथा पांतने विषे जीमणवार बेठी वहा उभो रहेणो नहीं। साखसूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन पहेले गाथा ३२ में'। तथा पाहुणा जीम्या पहेला तथा पाहुणारी ...

तेहना भात जीम्या पहेला लेवे लेवताने अनुमोदे तो चौमासी प्रायच्छित पामे, साख सूत्र 'निशीथ उद्देशे नवमें' इत्यादि अनेक सूत्रोंमें भगवाने वरज्यो छे। तिणसु ज्ञान प्रमुखरे वास्ते मीठाई आदि चीज कीधी, तथा अट्ठाई रे पारणे सारो प्रमुख कीधो, तथा वनोरा आदिरे अर्थे सीरादिक कीधा ते जीम्या पहेला लावणा नहीं। केई लावे छे, लाववारी थाप पिण करे छे दोष श्रद्धे नहीं इम पिण कहेछे पानामें नाम उतारे जद तो जाणा नहीं। पिण भगवाने तो सूत्रमें कठे इम कह्यो नहीं पनो आपरे मनरी थाप छे ॥ इति १६ बोल ॥

अथ १७ बोल —

औषध'भेषज तमाखु ओसो प्रमुख वासी राखना नहीं, केइ-रखते हैं तेहनो उत्तर पहिले दिन वहेर्यो ते दूजे दिन भोगवे तो चौमासी प्रायच्छित आवे। साख सूत्र निसीथ उद्देशे ११।' तथा वासी राखे तो अणाचारी थद्यां। साख 'दशवैकालिक सूत्र अध्ययन तीजे।' तथा 'निशीथ सूत्र उद्देशे ११' मोहादिकरे ओगसु वासी राखे पिण भोगवणी नहीं, इम अनेकसूत्रमें कह्यो छे, तिणसु साधुने औषध भेषज आदि कांइ स्थानकमें वासी राखना नही। दूजे दिन गृहस्थोरी आज्ञा लेई भोगवणा नही। केई गृहस्थरे घरसुं औषध भेषज गृहस्थरे घर हाट प्रमुखसु लावे वधे सो स्थानक में मेले, पिछे गृहस्थने भूलावे पिछ गृहस्थरी आज्ञा लेईने भोगवे छे भागवारी थाप करेछे विस्तार तो बडी हु डीमें छे ॥ इति १७ बोल

अथ १८ बोल ,—

आहारादिक औषध भैषज सूई कतरणी प्रमुख साधुरा भावसु साहमा आणी स्थानक प्रमुखमें देवे ते लेणा नहीं केई लेते है। तेहनो उत्तर-वस्त्र पात्रादिक आहारपाणी साहमो आण्यो लेवे तो आनाचारी कह्या। साख 'दशवैकालिकसूत्र अध्ययन ३।' तथा आहार पाणी वस्त्रादिक साहमो आण्यो लेवे भोगवे तो सबलो दोष लागे। साख 'दशाश्रुतस्कध सूत्र अध्ययन दूजे। तथा साहमो आण्यो वस्त्रादि लेवे तो चौमासिक प्रायछित आवे। साख 'निसीथसूत्र उद्देशे १८। तथा तीन बारणा उपरात आण्यो आहार लेवे तो मासिक प्रायच्छित आवे। साख निसीथसूत्र उद्देशे तीजे। तथा साहमो आण्यो आहार लेवे तो द्रव्यलिंगी यति कह्या। साख दशवैकालिकसूत्र अ ययन छट्टे। इत्यादि ठाम ठाम सूत्रमें साधुने साहमो आण्यो आहारादिक लेणो वरज्यो छे। केई गृहस्थ औरंरे घरे पात्रादिक देखीने आपरे घरे आणीने वहेरावे, तथा वस्त्र औषध भैषज आदि चीज हाट थी घरे साधुरे अर्थ आणी वहेरावे तथा केइ बाईयां साधारे ठिकाने आवे जब घडी प्रमुखमें जादो सुपारी औषध भैषज मिश्री बिदाम सूई कतरणी प्रमुख लावे छे सामाइक प्रमुखमें तो लावे पिण नहींतो क्यु लावे! तेतो साधुरी ल्हेरसु (भावसु) लावता दिसे छे। साधुरे वास्ते घडी प्रमुखमें राखता दीसे छे ते लेणा नहीं केई साधु साध्वी लेवे छे ॥ इति १८ बोल ॥

अथ १९ बोल -

याजोटादिक वस्त्र पात्र औषध भैषज आदि गृहस्थरे घर
लावे ते पाछां थानकमें सोंपणा नहीं पर सूंपेछे है तेहनो उत्तर
गृहस्थ हाथे कारज (काम) करावे नहीं साख दशवैकालिक
सूत्र अध्ययन सातमें गाथा ४७।' तथा गृहस्थ अंगे भार उपड़ावे
तो चौमासी प्रायच्छित आवे। साख 'निसीथ सूत्र उद्देशे १२ में
इत्यादिक अनेक सूत्रमें साधुने गृहस्थकनासु काम करावणा
वरज्या छे। केई साधुसाध्वी औषध भैषज सुई कतरणी वस्त्र
आदि अनेक पडिहारी वस्तु लावे ते पाछी गृहस्थ रे हाट प्रमुख में
देवाने जावे नहीं आप रहे जठे स्थानकमें सोंपे ते गृहस्थ आपरे
घरे ले जावे ते साधुरी सेंचल मेटी ते भणी गृहस्थ कनासु काम
करावो कहिजे ॥ इति १९ बोल ॥

अथ २० बोल -

साधु रे ठिकाने जायने आर्यांने १४ बोल करना नहीं। इम-
हीज साध्व्यारे ठिकाने साधुने जायने करना नहीं। कई करते है
तेहनो उत्तर-वृहत्कल्पसूत्र उद्देशे तीजे।' ऊभो रहेवो १ बेसवो २
सुयवो ३ निद्रा करवी ४ विशेष ऊंघवो ५, च्यार आहार करवा
६, वडीनीति ७, गलामो कफ ८ नाकनो मेल ९, लघुनीति १०
सज्झायरो करणो ११, ध्यान ध्यायवो १२, काउसग्ग करवो १३
पडिमा काउस्सग करवो १४ एतला बाना साधुरे ठिकाने
मुद्दे आगे साध्वीयांने करना नहीं। इमहीज साध्वीयांरे —

साध्वीयारे मुंढे आगे साधुने करना नहीं इम कह्यो छे। कठेइ अर्थमें विकटनेला ते सूर्य आथम्या पीछे साधुरे ठिकान साध्वीयाने १४ बोल करना नहीं इम कह्यो। केई विकट बेला पिण साध्वीयां साधारे ठिकाने उभी रहे छे, उभी रहेयारी थाप पिण करे छे। तथा व्यवहारसूत्र उद्देशे सातमें सउझाय करणी, तथा समवायागमें १२ संभोग कह्या, तिणमें आहारादिक नो लेणो देणो कह्यो, वंदणा करणी कही, तथा व्यवहारसूत्र उद्देशे ७ में साधु साध्वीने दीक्षा देवे, गौचरी प्रमुख विधि शिखावे। इमहीज साध्वी साधाने दीक्षा देवे गौचरी प्रमुखरी विधि शिखावे, इत्यादि सूत्रमें करणा कह्या तिण प्रमाणे करे तो दोष नहीं ऐसे केई कहवे छे। पिण सूत्रमें तो वरज्या छे ते साधारे ठिकाने साधारे मुढे आगे करना नहीं। केई साधारे ठिकाणे साधारे मुहढे आगे दिन उगासु लेइने दिन आथमे जठा ताई साधव्या रहेवो करे छे, आहारादिक करनो करे केई साधव्या सुवे पिण छे, लघुनीति वडीनीति पिण करे ते किम करना। डाह्या होय ते विचार जोजो ॥ इति २० बोल ॥

अथ २१ बोल ;--

कोई गृहस्थ कारण विशेषे दर्शन करवाने आये नहीं तो तेहने दर्शन देवाने जावणो नहीं, और उपकार हुवे तो जावणो, केई ऐसेही जाते हैं तेहनो उत्तर—जेणे कुले रूडो आहारादिक मिले तेणे कुल जे कोई रसग्रहधी छतो जाय जायने धर्म कहे ते गुणवन्त साधुने

स्रो में अंश नहीं पतावना लाय मोडमें भाग आवे नहीं, सात सूयग डागसूत्र स्कध पहेला अध्ययन सानमें गाथा २४।' फेइ साधु सानी श्रडी बाईया तथा मोटका भायारे घरे वियोग हुवे तथा शरीरमें कारण विशेष हुवे जद दर्शन देवाने रोज प्रिति घणा दिन ताइ जावे छै आय जायने धर्मकथा, चरचा वारता, वखाण वाणी ढाल प्रमुख सीखावे सुणावे छै, पिण मगलारे जावे नहीं, आछो आहारादिक वहेराने तिणरे घरे विशेष जाय जायने धर्म कहे छै तथा उपगार जाणे तो भगवान जायने धर्म कहे साखसूत्र 'सूयग-डाग सूत्र स्कध दूजा अध्ययन छट्ठा गाथा १७।' तथा भगवत गौतम ने कह्यो महारो अंतेवासी महासतक श्रावक संथारामें रेवती स्त्री ने कठोर वचन कह्या ते कल्पे नहीं, तूं जायने कहे, जब गौतमजी जायने सर्व संवन्ध कहीने प्रायश्चित देईने सुद्ध कियो साख सूत्र 'उपासग दशाग सूत्र अध्ययन आटमें।' तथा आणद श्रावक संथारो संलेषणा कीधी इम सांभलीने गौतमजी मनमें इम इच्छा उपजी आणदने देखु। गौतमजी आणद रे घरे गया। साख सूत्र 'उपासगदशासूत्र अध्ययन पहेले' अथ अठे भगवान गौतमने महासतक कने भेजा ते शुद्ध हुतो जाणने। पिण किणही बाईया भाईयांरी कहेणेसु दर्शन देवाने भेजा नहीं। तथा गौतमजी आणंद कने गया ते भाईयां बाईयारी कहेणासु दर्शन देवाने गया नहीं आपरे मनसु देखवाने गया छै। ते भणी दर्शन देवाने तो जायणो नहीं स धारो प्रमुख करतो हुवे तो जायने करावे ॥ इति २१ बोल ॥

अथ २२ बोल ,--

साधु ने गृहस्थरे घरे गौचरी गया जद तो आहारादिक असुजना छै खीरा प्रमुख सचित लागती हुवे तो, ते चीज पछे दुजी वार तीजी वार जायने लावणी नहीं। केई लाते है तेहनो उत्तर-साधु गया पहेली गृहस्थरे काजे उतया चावल, गया पछै उतरी दाल, चावल लेणा कल्पे, दाल लेणी कल्पे नहीं। इमहीज साधु गया पहेला उतरी दाल गया पिछे उतर्या चावल, तो दाल लेणी कल्पे, चावल लेणा नहीं कल्पे। पहेला दोनु उतर्या तो दोनुइ लेणा कल्पे। दोनुइ गया पिछे उतर्या तो दोनुइ कल्पे नहीं। साख-'व्यवहारसूत्र उद्देशो छट्ठे' कह्यो। ते भणी साधु गौचरी गया जद तो आहारपाणी असुजतो पड्यो छे खीरा प्रमुख सचित लागे छे तो ते वस्तु फेर दूजी वार तीजी वार जायने लावणी नहीं ॥ इति २२ बोल ॥

अथ २३ बोल,--

आलो थान राखणो नहीं, पछेवडी प्रमुखना मान जुदा जुदा करने राखना केई आला थान रखते है तेहनो उत्तर—न कल्पे साधु नें आलो थान राखणो। पछेवडी प्रमुखना मान जुदा जुदा करने राखणा कल्पे, साख सूत्र वेदकल्पसूत्र उद्देशो ताजे बोल ६—१०।' तथा अभेदाणो अखड वस्तु राखे राखताने मलो जावे तो मासिक प्रायच्छित आवे साख सूत्र—निसीथ सूत्र 'उद्देशे

प्रमुखरा मान जुदा जुदा करने राखणा । केई कलावुत प्रमुखरी धारी फाडीने आखो थान राखे छे, राखवारी थाप पिण करे छे, पिण धारी फाड्या थान भेदाणो नहीं होय चार टुकड़ा करे जद भेदाणो कहीजे डाह्यो होय ते विचार जुवो॥ इति २३ बोल ॥

अथ २४ बोल ,--

साधारे ठिकाणे आयने कहे काले अट्ठाई प्रमुखरो पारणो छे आप पधारजो इम नुतो देवे तो जावणो नहीं । तेहनो उत्तर पाच पदारी व दणामें नुतीया जावे नहीं, तेडिया जीमे नहीं इम कह्यो । तथा भमरारी परे जिम भमरो फूलने विषे जाय, तिम साध गृहस्थरा घरने विषे जाय साख सूत्र-'दशवैकालिकसूत्र अध्ययन पहेला ।' केई गृहस्थ साधारे ठिकाने आयने विनति करे काले अट्ठाई प्रमुखरो पारणो छे तथा जवाई प्रमुखरे वास्ते सीरो आदि चीज करसा सो आप काले मोडा पधारजो । इम नुतो दीया जावणो नहीं केई जावे छे जावारी थाप पिण करे छे ॥ इति २४ बोल ॥

अथ २५ बोल ,-

सागी सागा त्याग वार वार करावणो नहीं केई वार वार करावे हैं तेहनो उत्तर साधुपणो एक वार पचखणो चाल्यो छे साख दसवैकालिकसूत्र । , तथा वार वार त्याग करे भागे तो मयलो दोष लागे, साख—दशाश्रुतस्कध सूत्र अध्ययन तीजे ।' वार वार पचखाण भाजे तो चौमासी प्रायच्छित आवे साख 'नि

मीथसूत्र उद्देशे १२ में।' अथ हाजरीमें सदाई त्याग कर करने भाजे तिणरा प्रायच्छित्तरो काई कहेणो। तथा ठाणागसूत्र ठाण १० में प्रायच्छित दश कह्या छे। तथा निसीथसूत्रमें अनेक प्रायच्छित चाल्या छे, पिण त्यागतो पहेला कीयो तेहीज छे, दाय लागे नेहनो प्रायच्छित देवे ते भणी सागी सागी त्याग रोजामति दिन दिन प्रत्ये करावणा नहीं। केई सागी सागी त्याग दिनप्रत्ये हाजरीमें करावे छै, पानामें अक्षर मंडावे छै। भीखू भारीमल ऋषिरायरी जीतरी मर्यादा सब कबुल छै, खोलीमें मास रहे अठे ताई, लेपवारा त्याग छै। पिण किणहीने सूत्रके न्याय कोई बोल खोटो भासे ते किम मानसी। छद्मस्थ तो अजाण पणे कोइ बोल खोटो पिण थापदेवे, ते सुत्र बाचता म्राज (निगह) क्षाय आवे जद छोड देवे पिण मतरी टेक राखणी नहीं, तिणसु छद्मस्थरी बाधी मर्यादा तो चोखी जाणे जीतेतो राखणी, खोटी जाणे तो छोड देवे तो त्याग भागे नही। घणो विस्तार तो थडी हुंडीमें छै तिणमें देख लेणो ॥ इति २५ बोल ॥

अथ २६ बोल —

साध्वीने सुजनी जायगा मिलता थका अनुजति लेणी नहीं। नगा साधाने देखने तालादिक खुलायने ओर जायगामें साध्वीने उतरणो नहीं केई उतरते हैं तेहनो उत्तर—उपासरो चार आहार वस्त्र पात्रा एवं चार थाना अकल्पनीक वरजे। कल्पनीक लेवे मावसूत्र-दशवैकालिकसूत्र अध्ययन छट्ठा गाथा ४८ मी।' तथा

अकल्पनीक लेवे तिणने चोर कह्या साख सूत्र 'आचारांग सूत्र स्कध पहेला अध्ययन।' ते कोई साध्वीयाने सूजनी छती जायगा मिले तो पिण कीवाड खोली उतर छे उतरवारी थाप पिण करे छे, तथा आप उतरी ते जायगा साधाने देवे और जायगा तालो खोलायने उतरे उतरवारी थाप करे छे तथा रातरा सूवे जद तो जडयो चहावे तिण रीते जडे तो अटकाव नहीं पिण दिन रात जडणो खोलणो नही ॥ इति २६ बोल ॥

अथ २७ बोल ,—

वास प्रमुखमें परठावणीयो आहार करे जद पाधरो वास नहीं कहणो कई कहते हैं तेहना उत्तर—साधु वास करे जद तिणमें पाच आगार कह्या छे अजाणपणेथी भागे नहीं १, आफइ मुखमें पडे तो भांगे नहीं २, मोटी निर्जरा जाणे तो पचखाण पडे ता भागे नहीं ३, परठावणिया आहार करेतो भागे नहीं ४, रोगादिक उपजे मरणात कष्ट उपजे औषधादिक लेवे तो भागे नहीं ५ साख सूत्र 'आवश्यक सूत्र अध्ययन छट्ठा।' ए पांच आगार छे तिणमें अजाण पणे थी आफइ मुख माहे पडे ते साधुने खबर नहीं, तिण पाधरोवास कहणो पिण उपरला तीन आगार में तो जाणने आहार करे तिणसु पाधरो वास नहीं कहणो। केई पाधरो वास कहे छे कहवारी थाप पिण करे छे ॥ इति २७ बोल ॥

अथ २८ बोल ,—

गृहस्थरे माथे हाथ देणो नहीं, खुवो हाथ प्रमुख पकडणा नही

केई हाथ प्रमुख पकडते हैं तेहनो उत्तर गृहस्थरे माथे हाथ प्रमुखवस्तु ढंके ढंकताने भलो जाणे तो चौमासी प्रायच्छित आवे साख सूत्र -'निसीथ सूत्र उद्देशे ११।' तथा सामायिकमें आतमा श्रावक नो अधिकरण ही साख सूत्र भगवती शतक सातमे उद्देशो १० में।' केई गृहस्थरे माथे हाथ देवे छे छुवो प्रमुख करे छे। केई गृहस्थरे माथे तो हाथ देवे नहीं हाथ देणो पिण नहीं इम कहे छे, केई गृहस्थरो छुवो हाथ प्रमुख पकडे छे, हाथ पकडने सुणो सुणो इम पिण कहे छे। माथे हाथ दिया चौमासी प्रायच्छित आवे तो छुवो प्रमुख पकड्या प्रायच्छित किम नहीं आवे? माथे हाथ दिया संभोग लागे तो छुवो प्रमुख पकड्या संभोग किम नहीं लागे? गृहस्थरो शरीर सर्व अधिकरण छे॥ इति २८ बोल॥

अथ २९ बोल,-

पहेले पोहरमें वहेर्‍यो औषधादिक ते छेहले पोहरमें भोगवणो नहीं केई भोगवते हैं तेहनो उत्तर—न कल्पे साधु साध्वीने पहेला पोहरनों वहेर्‍यो छेहले पोहर भोगवणो, पिण गाढा गाढे कारण भोगवो कल्पे। तथा आलेपन औषध न कल्पे पहेले पोहरनो छे-हले पोहर शरीरे चोपडणो। पिण गाढागाढे कारणे कल्पे चोपडणो। साख सूत्र 'वृहत्कल्प सूत्र उद्देशे पांचमें बोल ४७, ४८, ४९।' तथा 'निसीथ सूत्र उद्देशे बारमें।' पहेले पोहर वहेर्‍यो छेहले पोहर भोगवे भोगवताने भलो जाणे तो चौमासी प्रायच्छित पामे इम कह्यो। ते भणी आहारपाणी औषध भैषज ओसो तमाखु आदि

पहले पोहच्यां पेहवां छे हले पोरमें मागवणो नहीं ईन विण नहीं करणो। विण गाढा गाढ़ कारणे मागवे तो दोष नहीं। केई गृहस्थरा आगा नेई मागवे छे साधुने कने रहे औसदे साधुरी न्याय छे, साधु आपता करे छे, गृहस्थरो चीजरो साधु ने जावनो करणा कल्पे नहीं, तिणसुं साधुरी चीजरी गृहस्थीरी आज्ञा चाले नहीं। भगवान ता सूत्रमें गाढा गाढा कारणे भोगवणो कयो विण गृहस्थरी आज्ञा नेई मागवणा ता सूत्रमें कठेइ कही नहीं। तथा औषध भेषज आदि पडिहारी चीज पच सो गृहस्थने सुप देनी साध्या पिछे गृहस्थरा छें, साधुरे चाहीजेता गृहस्थ कनासु जाच लेणा विण याच आज्ञा लेईने भोगवणी नहीं॥इति २९ बोल॥

अथ ३० बोल ,—

दो कोश उपरांत आहार पाणी औषध भेषज ओसो तमाकु ले जाय भोगवणा नहीं कई भोगवे हैं तेहनो उत्तर—दो कोश उपरांत आहार ले आवणा नहीं सावसूत्र 'वेदकल्प सूत्र उदेशे चोथे।' तथा अर्ध जोजन उपरांत ले जाय भोगवे तो चौमासी प्रायच्छित पामे। साख सूत्र 'निसीथ सूत्र उदेशे बारमें।' कई दो कोश उपरांत औषध भेषज तमाकु आदि ले आवे छे गृहस्थरी आज्ञा लेइ भोगवे छे ॥ इति ३० बोल ॥

अथ ३१ बोल—

सात आठ बरसरा ने साधुपणो देणो नहीं केई देते हैं तेहनो उत्तर-आठ बरस उणा जनयाने दिक्षा देणी न कल्पे, आठ बरस

जनम्याने थया तेहने दिक्षा देणी कल्पे । साख सूत्र व्यवहारसूत्र उद्देशे दशमें बोल १८, १९, में ।' अठे जनम्या पीछे आठ वरस थया नवमो वरस लागा पीछे साधुपणो देणो । पिण पहिला साधुपणो देणो नहीं । केई गर्भरा नवमास जाजेरा गिणने सात वरस जाजेरा जनम्या ने दीक्षा देवे छे देवागी थाप पिण करे छे। भगवान तो सूत्रमें कठेई कह्यो दीसे नहीं । सूत्रमें तो जनम्या पीछे वधाइ दीनी, जन्म महोच्छव चाल्या छे, पिण गर्भमें उपजे तिणने जनम्या नहीं कह्या । हिवडा कोई पूछे थारो कदरो जन्म छै, जद कहै फलाणे मासरो फलाणी तिथिरो जन्म छै, पिण गर्भमें उपन्यो तेहने जनम्यो कह्यो नहीं, केई आपरा मनसु गर्भमें उपनो तेहने जनम्यो ठहरावने नवमास जाजेरा गर्भरा जाणने सात वरस जाजेरा जनम्याने दीक्षा देवे छै, ते प्रत्यक्ष विरुद्ध दीसे छै । तथा प्रवचनसु विपरीत प्ररूपे तिणने भगवान निन्हव कह्या । सूत्र 'उववाइ' मध्ये ॥ इति ३१ बोल ॥

अथ बतीसमा बोल ,—

सावद्य आमना करनी नहीं केई करते हैं तेहनो उत्तर गृहस्थने कह बेस, इहा आव, कारज कर, सुय, उभो रहे, जाय इहाथी, इम बोले नहीं । साख सूत्र 'दशवैकालिकसूत्र अध्ययन सातमें गाथा ४७ ।' अथ केई गृहस्थरे आवण जावणरो पिण कहे छै, साधु कने आदमी रहे छै त्याने आमना करने साधव्यां साथे मेले छै, आमना करने गाम परगाम साधु साधव्याने समाचार

पिण कहवावे छे। पूजजी दीसा जावे जद लाठी प्रमुख लेइ आगे चाले छै, श्रीपूज्य रे छरीदार आगे चाले तिम चाले छै। कदे साधे नहीं आवे जद ओलमो पिण देवे छै; तथा सामी कर गृहस्थने बुलावे पिण छै। कई आमना करने कागद पिण लिखावे छे केई आदम्याने आमना करने द्रव्य पिण दरावे छै पाचमो महाव्रत भागी कहीये ॥ इति ३२ बोल ॥

अथ ३३ बोल,—

साधु रे भूत प्रमुख लागे तो कूटा पीटा करणो नहीं। केइ कूटा पीटो करते हैं तेहनो उत्तर-जक्ष प्रवेशकी साध्वीने साधु ग्रहे तो आज्ञा अतिक्रमे नहीं। तथा उनमाद पाम्या वायरे जोरे साध्वीने साधु ग्रहे साख सूत्र वेदकल्प उद्देशो छट्ठे बोल ११, १२। ते भणी साधु साध्वीने भूत प्रमुख लाग्या तथा वायरे जोरे उपद्रव्य करे नाचे कुदे भागे जद पकड लेणो डारी प्रमुखसु बाधी राखे पिण वस पुगे जीते जाया देणो नहीं। केई साधु नाम धरायने कूटा पीटो करे छै, साधुने कोई मारे कूटे तो पिण पाछो मारे कूटे नहीं। शास्त्र में घणा ठोर कह्यो छे। बाइस परिसहमें वध परिसह है ते जीतनो कह्यो ॥ इति ३३ बोल ॥

अथ ३४ बोल—

थारे रोगादिक मिट जावे तो तथा भरतार प्रमुख प्रदेशसु राजी खुसी आय जावे तो पूजजीरा दर्शन करना, इतरा दिन सेवा करणी एहवो घधो करे। उपदेश देइने वधा करावणा नहीं,

तेहनो उत्तर—गृहस्थरी शाता पूछे तो अणाचारी कह्या साख सूत्र दशवैकालिक अध्ययन तीजा ।' अथ केई तो गृहस्थरी शाता पूछे छै । वलि शाता पूछनी तो जिहाई रही गृहस्थरा शरीर री शाता वछनी पिण नहीं । थारा शरीर री रोगादिक मिट जाय तो पूजजीरा दर्शन करो, पूजजीरी आमना राखो, इम कहे तै गृहस्थरा शरीर री शाता वछी कहीजे । तथा भर्त्तार पुत्रादिक री रोग मिट जावे तथा प्रदेशसु राजीखुसी आय जावे तो पूज-जीरा दर्शन री बंधो करो, इम कहे तो गृहस्थरा शरीर री शाता वछी कहिजे । ससार की शीष देवे तो पाचमो महाव्रत भागो कहिजे । ससारकी शीख तो धनरी शरीर री बेटा प्रमुख सर्व परिग्रहमें छै । तथा गृहस्थरो शरीर छकायरो शास्त्रमें कह्यो छे । केई संसारकी शीष पिण देवे छे । केई गृहस्थरा शरीरकी शाता हुवारो उपाय पिण बतावे छे ॥ इति ३४ बोल ॥

अथ ३५ बोल ,—

गृहस्थने बंधो कराय फलाणो गाम ताई पुहचावो, इम कन्नो करायने साथ ले जावणा नहीं कई ईस माफक धन्धो कराइले जाते है तेहनो आहार पाणी पिण लेना नहीं । तेहनो उत्तर—सथवारादिक अणमिल्या साधुलिंग फेरे । साखसूत्र—व्यवहार उद्देशो पहेले बोल २२ में ।' अथ अठे सथवारादिक अणमिल्या भेष पलटे पिण धन्धा कराय गृहस्थने साथे लीया चाल्या नहीं । तथा बलभद्रमुनि आदि वनमें रह्या छ पिण गृहस्थने वनमें सेश

करो इम उपदेश दियां चाल्यो नहीं, तथा सूत्रमें कठेई उपदेश तथा च धा कराई, विहारमें साथे लीया चाल्या नहीं। केई साधु साध्वी उपदेश देई तथा वचा कराई फलां गाम मांई पुहुचावो इम गृहस्थन भाया वापारी साथे ले आवे छे, आहार पाणी वहेरता जावे छे केई वावा तथा केई भाया कटोरदानादिक मिठाई प्रमुखसु भर ले जाय छैं, आगे ग्रामादिकमें जाय रसोई पिणकने जाय रसोई पिण करे छे। त साधारी लेहरसु केतो पिण करता दिसे छै। केई साधारी लहेरसु मिठाई प्रमुख पिण मेता ले जायता दिसे छे। केई वाया रावरो पाणी गड़ामें भरले करे छै, ते पिण साधु साध्वीयांरी लेहरसु वे तो करता दीसे छे। साधु साधव्या मनमें पिण केई जाणे छे। ग्रामादिक कारो साधु साधव्यां घणी छे पिण आहार पाणी री संकड़ाई तो पड़ती दीसे नहीं वायां भाया साथे छे इम जाणी घणा ठाणा साथे राखता दीसे छे॥ इति ३५ बोल॥

अथ ३६ बोल,—

दोषाला आहार पाणी लेणो नहीं, तथा शङ्का सहित आहार पाणी लेणो नहीं कई लेते है तेहनो उत्तर—साधु थई आधाकर्मी अन्नपाणी उपाश्रयादिक भोगवे तो सात कर्म ढीला बंध्या हुवे तो गाढ़ा बन्ध बांधे, चीकणा बांधे च्यारगति संसारमांहि परिभ्रमण करे, पोताना धर्मथी दूरो पड़े छकायरी दया रहे नहीं साखसूत्र —'भगवती सूत्र शतक पहला, उद्देशा नवमा।' तथा आधाकर्मी

न्नपाणी उपाश्रयादिक भागवे तो सबलो दोष लागे। साखसूत्र दशाश्रुतस्कध अध्ययन दूजा।' आधाकर्मी अन्नपाणी उपाश्रया दिक भोगवे तो चौमासी प्रायच्छित आवे, साखसूत्र— निशीथ द्देशा दशमा।' आधाकर्मी जे वहीये साधु रे अर्थ छकायरो आरभ करी अन्नपाणी उपाश्रयादिक नीपजावे सहु दोष माहि मोटो र दोष आठ कर्म दृढ बन्ध करे। चार गति माहि घणो काल भमे, ते यति अशुद्ध आहार भोगवे तेहने दीये दया रहे नहीं, अने सूत्र ग्रम चारित्र धर्म नाशे, अने देणहार गृहस्थ सजम धन हरवाथी गाडवी सरीखो अल्प आयुप बांधे। तथा आधाकर्मी जे लीघे अधोगति जाय। तथा संजमथी हेठो करे ॥२॥ जे चारित्र आत्मना घात करे ॥ ३ ॥ जे ज्ञानावरणादि कर्म आत्मा उपर चिणे ॥४॥ ते भणी ए आहार साधु न लेवे। अने उत्तम गृहस्थी नहीं देवे, साखसूत्र 'भगवती शतक। तथा साधु अर्थ आधाकर्म अधिक करे ते दोष, साखसूत्र 'दशवैकालिक अध्ययन पाचमा, उदेशा पहेला गाथा ५५॥' तथा मोल लीयो अन्नपाणी वस्त्र पात्रादिक भोगवे तो अणाचारा कह्या, साखसूत्र दशवैकालिक अध्ययन तीजा गाथा पहिली। तथा मोल लीधो आहारादिक भोगवे त्याने द्रव्यलिगी यति कह्या साखसूत्र 'दशवैकालिक अध्ययन छट्ठा गाथा ४६।' तथा अन्नादिक कल्पनीक छे के अकल्पनीक छे तेहने विषे शका उपजे तो एहवो अन्नादिक न कल्पे साखसूत्र—दशवै कालिक अध्ययन पाचमा उद्देशे पहिले गाथा ४४।' तथा पाणी त्रिहु प्रकारना छे सचित्त १ अचित्त २, मिश्र ३, तिहा साधुने सचित्त

करो इम उपदेश दियो चाल्यो नहीं, तथा सूत्रमें कठेई उपदेश नथा य धा कराई विहारमें साथे लीया चाल्या नहीं। ऐई साधु साध्वी उपदेश देई तथा वधा कराइ फलां गाम ताई पुहुचावो इम गृहस्थने भाया बायाने साथे ले जावे छे, आहार पाणी वहेरता जावे छे ऐई बाया तथा ऐई भाया कठोरदानादिक मिठाइ प्रमुखसु भर ले जावे छे, आगे ग्रामादिकमें जाय रसोइ पिणकमें जाय रसोई पिण करे छे। ते साधारी लेहरसु घेतो पिण करता दिसे छे। ऐई साधारी ल्हेरसु मिठाई प्रमुख पिण वेतो ले जावता दिसे छे। ऐई बाया रावरो पाणी घडामें भरने करे छे, ते पिण साधु साध्वीयारी लेहरसु ये तो करता दीसे छे। साधु साधव्या मनमें पिण ऐई आणे छे। ग्रामादिक छाटो साधु साधव्या घणी छे पिण आहार पाणी री संकडाई तो पडती दीसे नहीं बाया भाया साथे छे इम जाणी घणा ठाणा साथे राखता दीसे छे॥ इति ३५ बोल॥

अथ ३६ बोल,—

दोषीलो आहार पाणी लेणो नहीं तथा शङ्का सहित आहार पाणी लेणो नहीं ऐई लेते हैं तेहनो उत्तर—साधु शह आधाकर्मी अन्नपाणी उपाश्रयादिक भोगवे तो सात कर्म ढीला थका हुवे तो गाढा बन्ध बाधे, चीकणा बाधे चारगति संसारमाहि परिभ्रमण करे, पोताना धर्मथी हेठो पडे छकायरी दया रहे नहीं साखसूत्र —'भगवती सूत्र शतक पहला, उद्देशा नवमा।' तथा आधाकर्मी

अन्नपाणी उपाश्रयादिक भोगवे तो सबलो दोष लागे। साखसूत्र 'दशाश्रुतस्कध अध्ययन दूजा।' आधाकर्मी अन्नपाणी उपाश्रया दिक भोगवे तो चौमासी प्रायच्छित आवे, साखसूत्र— निशीथ उद्देशा दसमा।' आधाकर्मी जे वहीये साधु रे अर्थे छकायरो आरभ करी अन्नपाणी उपाश्रयादिक नीपजावे सहु दोष माहि मोटो ए दोष आठ कर्म दृढ बन्ध करे। चार गति माहि घणो काल भमे, जे यति अशुद्ध आहार भोगवे तेहने हीये दया रहे नहीं, अने सूत्र धम चारित्र धर्म नासे; अने देणहार गृहस्थ सजम धन हरवाथी धाडवी सरीखो अल्प आयुष बाधे। तथा आधाकर्मी जे लीधे अधोगति जाय। तथा सजमथी हेठो करे ॥२॥ जे चारित्र आत्मनी घात करे ॥ ३ ॥ जे ज्ञानावरणादि कर्म आत्मा उपर चिणे ॥४॥ ते भणी ए आहार साधु न लेवे। अने उत्तम गृहस्थी नहीं देवे, साखसूत्र 'भगवती शतक। तथा साधु अर्थे आधणमें अधिक ओरे ते दोष, साखसूत्र 'दशवैकालिक अध्ययन पाचमा, उदेशा पहेला गाथा ५५॥' तथा मोल लीयो अन्नपाणी वस्त्र पात्रादिक भोगवे तो अणाचारी कह्या, साखसूत्र दशवैकालिक अध्ययन तीजा गाथा पहिली। तथा मोल लीधो आहारादिक भोगवे त्याने द्रव्यलिगी यति कह्या साखसूत्र 'दशवैकालिक अध्ययन छट्ठा गाथा ४६।' तथा अन्नादिक कल्पनीक छै के अकल्पनीक छै तेहने विषे शका उपजे तो एहवो अन्नादिक न कल्पे साखसूत्र—दशवै-कालिक अध्ययन पाचमा उद्देशे पहिले गाथा ४४।' तथा पाणी त्रिहु प्रकारना छै सचित्त १ अचित्त २, मिश्र ३, तिहा साधु ने सचित्त

अन मिश्र ए अजोग्य न कल्पे एक अचित्त लेवो कल्पे छे ते अ
चित्त एक स्वभावे छे बीजो बाहिर शस्त्रे करी व्यवहारनय छे,
तिहां स्वभावे ते यद्यपि अतिशयज्ञानी जाणे तो पिण साधु ने लेवो
व्यवहारे प्ररुप्यो नहीं जे शस्त्रे करी वर्णादिके फिर्या तिहां ए एषणी-
य लेवो प्ररुप्यो सांखसूत्र—'आचारांगसूत्र स्कंध पहेला अध्ययन
पहेला उद्देशा ताजा।' अथ केई बाया भाया आज पूजजी पधारसी
इम जाणी अधिको आहारादिक नीपजावता दीसे छे। तथा
मिठाई प्रमुख पिण मोल मंगावता दीसे छे। केई बाया कादा
प्रमुखरी तरकारी पिण करती दीसे छे। तथा घणा साधु साध्वी
आणने अधिको आहार पाणी केई नीपजावता दीसे छे। केई
बाया तथा भाया पाको पाणी तो एक दोय आदि पीवें, पाणी
राखरो घडा मटक्या सू णा प्रमुख भर राखे छे, थोडी राख घाले
जद्तो सचित्त रहे तो दीसे छे। कदा कोई घणी राख घाले
वर्णगंध रस प्रमुख फिर जावे जद्तो अचित्त पिण होय जावे।
भाया बाया एक दोय आदि पिवावारी पाणी मणाबंध करे ते
साधारी लेहर लायने करता दाखे छे। केई कपडो बुमटो आदि
साधारी लेहरसु अधिको पिण मंगावता दीसे छे। तथा केई
बाया बदाम मीश्री खारो सुपारी प्रमुख घणी मंगावे छे, इतरी
खाती तो दीसे नहीं त पिण साधारे वास्ते अधिक मंगावता
दीसे छे। केई साधु पिण तथा साधव्या पिण जाणता दीसे,
ए आहार पाणी आदि बिदाम मीश्री खारा प्रमुख अधिको साधारे
वास्ते करे छे, तथा माल बिदाम प्रमुख मंगावता दीसे छे, ने

जाण जाणने अशुद्ध वहरावे छै । केई साधु साधव्या जाण जाणने अशुद्ध आहार पाणी विदाम मीश्री खाटो आदि अनेक वस्तु वह-रता दीसे छे, डाह्या हाय ते विचार जोवो ॥ इति ३६ बोल ॥

अथ ३७ बोल,—

चौमासामें विहार करणो नहीं कई करते हैं तेहनो उत्तर—न कल्पे साधु साधव्याने धरमाते विहार करवो । शेषे काले विहार करवो कल्पे साखसूत्र वेदकल्प उद्देशे पहिले बोल ३६, ३७ ।' तथ पाउस (वर्षा) ऋतु लाग्या पिछे विहार करे तो (वर्षाकाले विहार करे तो, चौमासी गुरु प्रायच्छित आवे । साखसूत्र 'नि-सीथसूत्र उद्देशे दशमें । केइ कहे चौमासामें विहार करीने परगाम जाय तो दोष नहीं पिण पाछो आय जावणो रात्रिको रहणो नहीं इसी प्ररूपणा करे छै । चौमासामें विहार करीने पाच तथा तीन च्यार कोश जायने पाछा आवे छै दोष गिणे नहीं। एक दिन चौमासामें विहार करीने परगाम जाय तो चौमासी प्रायच्छित आवे । चौमासामें घणी वार विहार करे, तथा विहार करवारी थाप पिण करे तिणरा प्रायच्छितरो काई कहणो । तथा भगवान चौमासामें पाच कारण विहार करवो कल्पे-राजादिकरा भयथी १ दुर्भिक्षका भयथी २, कोई उपद्रव होय तो ३, उदकनो (पाणी नो) प्रवाह आवतो जाणी ४ कोई मोटो अनार्येसु हणातो होयतो ५, । वली पाच कारणे विहार करवो कल्पे ज्ञानने अर्थ १ दर्शनने अर्थ २, चारित्रने अर्थ ३, आचार्य उपाध्याय संथारो कर्यो होय

तो ए कारणे कल्पे ४, आचार्य उपाध्याय ना वैयावचने वास्ते ५, इत्यादिक भगवाने कह्यो तिण रीते चौमासामें विहार करने दूजे गाम नगर जाय रहे तो दोष नहीं, पिण विहार करने दूजे गाम नगर जायने चौमासामें पाछो आवणो, रात्रि रहणो नहीं इम तो किण ही सूत्रमें कह्यो दीसे नहीं ॥ इति ३७ बोल ॥

अथ ३८ बोल ,—

नाम लेईने आहार पाणी जायगा प्रमुखरा त्याग करावणा नहीं केई नाम लेकर त्याग कराते हैं तेहनो उत्तर भगवानने वन्दना करीने आणद श्रावक कहे आज पिछे अन्य तीर्थना साधु तथा अन्यतीर्थना देव तथा अन्यतीर्थ परिग्रहीत चैत्य ते साधु ने वादणा नहीं, नमस्कार करणो नहीं, पहिला तेहन बोलावणा नहीं, तेहने असनादिक चार आहार देवा नहीं। साखसूत्र—उपासग दशाग अध्ययन पहिला। तथा इग्यारे श्रावकनी प्रतिमा ते समकीति निरमली पाले पाच परमेश्वर बिना औराने नमस्कार करे नहीं साख सूत्र '—आवश्यक अध्ययन चोथा'। तथा दशाश्रुत स्कन्ध उववाइ अंग आदि सूत्रमें पिण इग्यारे पडिमारो अधिकार छै। अथ अठे आणद आदि श्रावका आप भगवत कह्यो छै पिण भगवान तो कह्यो नहीं, थे अन्य तीर्थाना साधाने वदणा कीजो मती, आहार पाणी जायगा प्रमुख दीजो मती, तथा त्याग पिण कराया नहीं अठेई सूत्रमें नाम लेई वदणा आहार पाणी त्याग कराया चाल्या नहीं। केइ आपरा श्रावक श्राविकाने म्हारे टोला

माहि सु न्यारा हुवे त्याने वदणा करणी नहीं, एम्यो कहीने त्याग करावे छै केइ आहार पाणी जायगा प्रमुख पिण त्याग करावता दीसे छै । पिण अन्य तीयारा साधाने वदणा नमस्कार प्रमुखरा त्याग करावे नहीं। म्हारे माहिसु न्यारा विचरे त्याने वदणा आहार पाणीरा त्याग करावे ते प्रत्यक्ष दोष दीसे छै । तथा सोलह सुपनामें कह्यो ते लिखीये छीये— ढाल चद गुपत राजा सुणो। सु स करसो साधु वारवा, कर कर उधी चरचारे। वैरीने शोक जिम वरतसी, घणा पाखड्यारा परचारे ॥ चन्द्र गुपत राजा सुणो ॥१॥ चवक निकल होसी घणा, कुगुरु कहेसी तिम करसीरे। श्रावक विधि नहीं समजसी, परभवसु नहीं डरसीरे ॥ चद गुपत राजा सुणो ॥ २ ॥ इति ३८ बोल ॥

अथ ३९ बोल,—

देवता देखे नहीं, कहे देवता देखु तो महामोहणी कर्म बाध। तथा देवतारा कहेणसु असुद्ध आहारादिक लेणा नहीं, तथा धपाण पिण जोडणा नहीं, केइ जोडते है आहार पाणी पिण लेते हैं तेहनो उत्तर—देवता देखे तो नहीं कहे देवता देखु छु । इम कहे तो महा मोहणी कर्म बाधे साख सूत्र'—दशा श्रुतस्कध अध्ययन नवमा।' केईक साधव्या कहे प्रत्यक्ष विमानिक देवता आवे छे वंदणा भाव करे छे । केइ साधुजी पिण कह छै भव पिण बतावै छै गोचरी जावे जद बाई प्रमुखरे बीजादिक लागता हुवे जद केई कहे देवताने पुछो, जद देवताने समरे जब कहे

देवता आयो छे । जद पेइ साधु पूछे इण बीजादिकमें जीव छेके नहीं जद कहे यह बीजादिकना जीव चव गयो जद असुजती वाइ प्रमुख गोले नहीं । सूत्रमें देवता आगे प्रत्यक्ष भगवान रा तथा गणधर प्रमुख साधारा दर्शन करवाने आवता, पिण देवतारी कहणस्यु आहार पाणी लायो चाल्यो नहीं देव तारी प्रतीत पिण नहीं । आपरे व्यवहारमें शुद्ध जाणाने आहार पाणी लेणो । अशुद्ध जाण तो छाड देणो । अवार तो देवता आवे जिणरी ठीक पिण नहीं । और साधु साधव्याने तो दीसे नहीं । एक जणाने दीसे तेहनो कुण जाणो । ज्ञानी वदे ते प्रमाण छे । पिण अवार विमाणिक देवता तो आवणा दुर्लभ छे ॥ इति ३९ बोल ॥

अथ ४० बोल '—

सिज्यातर नो आहार पाणी लेणो नहीं । तथा अच्छा आ— हारादिकरे वास्ते जायगा छोडने रात्रि का और जायगा सुवणो नहीं पेइ सोते हैं आहारादिक लेते हैं तेहनो उत्तर—एक गृह स्थरे घर होय तो ते घरना आहार न लेणो, व घण चार जणाना होय तो ते माहि एक ना घर सज्यातर थापणो, और शेष घर नो आहार लेवो साख सूत्र'—वेद कल्प उदेश दूजे ।' सज्या तरना नातीला जुदा जुदा चोका रूप घर छै, जुदा जुदा चूला छै, सज्यातरनो लूणा पाणी भेलो हुवे तो न कल्पे तेहनो आहार पाणी । तथा तेल वेचवारी शाला छै अनरो वेच ता हुवे

तेहने सज्यातरनो सीर हुवे तो न कल्पे। इमहीज गुलनी शाला इमहीज घऌाजनी शाला, इमहीज सुखडी कदोईनी शाग, इमहीज औषधनी ए सर्वमें सज्यातर नो सीर हुवे तो न कल्पे। साख सूत्र—व्यवहार उद्देशा नवमा में घणो अधिकार छे। तथा सज्यातरनो पिंड ग्रहे तो, सज्यातर पिंड भोगवे तो सज्यातरनो घर जाण्या विना गोचरी उठे तो मासिक प्रायच्छित आवे साख सूत्र-निसीथ उदेशो दूजे। तथा चरचादि गोठादिक नो भात उद्यानने विषे ले जाता देखी भातनी आशाये आपणो थानक मूकी ते रात्रि अन्य थान के रहे रहेताने भलो जाणे तो गुरु चोमासी प्रायच्छित आवे। साख सूत्र — निसीथ सूत्र उदेशे ११ बोल ८३। अथ केई आछा आहारादिक जाणीने रस लपटी थका सज्यातरनो आहार भोगवे छे। आधण का थोर जायगा जाय सुवे छे, सुवारी थाप पिण करे छे, दोष श्रद्धे नहीं। भगवान तो सूत्रमें भातनी आशाए आपणो थानक मूकीने रात्रि अन्य स्थानक रहे तो चोमासो प्रायच्छित कह्यो। केई भातनी आशाए रात्रिका अन्य स्थानकमें रहवोइ करे छे। तथा रहवारी थाप पिण करे छे यारे प्रायच्छितरो काई कहणो। तथा जायगारा धणी हुवे तेहनी आज्ञा लेणी। तथा भुलावण हुवे तेहनी आज्ञा लेणी, गाममें धणी हुवे तो तेहनो सज्यातर टालणो। तेहनो घर पुछ पछी चोखस कराने गोचरी उठणी। तथा धणी परगाम हुवे तो जायगारी भुलावण हुवे तेहनो घर सिज्यातर टालणो, पिण पर